अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : द्वितीय - जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 07 जनवरी, 2018)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

सावधान

1. परीक्षा में नकल नहीं करें। 2. प्रामाणिकता से परीक्षा देकर ईमानदारी का परिचय दे। 3. मायावी नहीं मेधावी बनें। 4. नकल से नहीं अकल से काम लें।

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
5. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	कुल योग
प्राप्तांक							
पूर्णांक	10	10	10	20	18	32	100
पुनः जाँच							

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) वस्तु के सामान्य धर्म को जानना कहलाता है -

(क) ज्ञान (ख) दर्शन

(ग) चारित्र (घ) तप ( )

(b) दर्शन मोहनीय कर्म की प्रकृति नहीं है-

(क) मिथ्यात्व मोहनीय (ख) मिश्र मोहनीय

(ग) कषाय मोहनीय (घ) सम्यक्त्व मोहनीय ( )

(c) किस कर्म की स्थिति सबसे उत्कृष्ट होती हैं-

(क) नाम कर्म (ख) वेदनीय कर्म

(ग) मोहनीय कर्म (घ) आयु कर्म ( )

(d) मनुष्य गति के कितने भेद होते हैं-

(क) 14 (ख) 48

(ग) 198 (घ) 303 ( )

(e) दूसरी नरक की आगति है-

(क) 20 (ख) 19

(ग) 18 (घ) 16 ( )

(f) तीर्थंकर की आगति है-

(क) 82 (ख) 83

(ग) 38 (घ) 25 ( )

(g) तीसरे गुणस्थान में योग होते हैं-

(क) 13 (ख) 10

(ग) 12 (घ) 14 ( )

(h) अरूपी के 61 भेदों में मतिज्ञान के भेद हैं-

(क) 6 (ख) 4

(ग) 5 (घ) 12 ( )

(i) सातवीं नारकी में जीव कितने उपयोग लेकर जाते हैं-

(क) 2 (ख) 8

(ग) 7 (घ) 5 ( )

(j) 5 उपयोग लेकर आते हैं : 5 उपयोग लेकर निकलते हैं-

(क) वाणव्यन्तर (ख) पाँच अनुत्तर विमान

(ग) पहला देवलोक (घ) भवनपति ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) अनन्तानुबंधी कषाय की स्थिति जीवन पर्यन्त होती है। ( )

(b) जीव पर अनुकम्पा करने से असातावेदनीय कर्म का बंध होता है। ( )

(c) आयुकर्म का अबाधाकाल नहीं होता है। ( )

(d) सम्मूर्च्छिम मनुष्य अपर्याप्त अवस्था में ही काल कर जाते हैं। ( )

(e) असन्नी मनुष्य की आगति 171 की होती है। ( )

(f) गर्भज की गति 285 की होती है। ( )

(g) उपशांत मोहनीय गुणस्थान में गुणस्थान एक ही होता है। ( )

(h) निवृत्ति बादर गुणस्थान में लेश्या एक ही होती है। ( )

(i) संसार में जो भी पुद्गल दृष्टिगोचर होते हैं, वे अष्टस्पर्शी स्कंध होते हैं। ( )

(j) तीन विकलेन्द्रिय में जीव 5 उपयोग लेकर जाते हैं। ( )

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1 = (10)**

(a)	किरमिची रंग	(क) 20 भेद	.....
(b)	मन की वक्रता	(ख) 30 भेद	.....
(c)	तिर्यंच पंचेन्द्रिय	(ग) बुद्धि	.....
(d)	बलदेव की गति	(घ) 02	.....
(e)	पहले गुणस्थान में उपयोग	(च) लोभ	.....
(f)	चौस्पर्शी रूपी	(छ) 8	.....
(g)	वैनयिकी	(ज) 12	.....
(h)	उपयोग के भेद	(झ) अमर	.....
(i)	तीसरी नरक में उपयोग लेकर जाना	(य) 6	.....
(j)	पाँच स्थावर में अज्ञान	(र) अशुभ नामकर्म	.....

प्र.4 मुझे पहचानो :- **10x2 = (20)**

(a) मेरे द्वारा जीव सत् और असत् के ज्ञान से हीन हो जाता है। .....

(b) मेरे प्रभाव से जीव अपने अगुरुलघु गुण को प्रकट नहीं कर पाता है। .....

(c) मैं ऐसी कषाय हूँ, जिसमें मरकर जीव देवगति में जाता है। .....

(d) मेरी जघन्य स्थिति 12 मुहूर्त्त है। .....

(e) मेरी आगति 108 की तथा गति मोक्ष है। .....

(f) मेरी आगति 38 की तथा गति मोक्ष है। .....

(g) मेरी आगति 276 की तथा गति 42 की है। .....

(h) मैं देवगति का एक भेद हूँ तथा मेरे 15 भेद हैं। .....

(i) मैं उपयोग का थोकड़ा हूँ, मेरा उल्लेख किस सूत्र में किया गया है। .....

(j) मैं उपयोग का 11वाँ भेद हूँ। .....

प्र.5 एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- **9x2 = (18)**

(a) गोत्र कर्म की जघन्य स्थिति तथा उत्कृष्ट अबाधाकाल लिखिए।

.....

.....

.....

(b) मनुष्यायु बन्ध के चार कारण लिखिए।

.....

.....

.....

(c) प्रत्येक प्रकृति के 8 भेद लिखिए।

.....

.....

.....

(d) **उच्च गौत्र कितने प्रकार से बंधता है ? नाम लिखिए।**

.....

.....

.....

(e) **तिर्यंच पंचेन्द्रिय के भेद लिखिए।**

.....

.....

.....

(f) **15 कर्मभूमिज सन्नी मनुष्य की आगति एवं गति लिखिए।**

.....

.....

.....

(g) **देवकुरु-उत्तरकुरु के युगलिक आयुष्य पूर्ण कर कहाँ उत्पन्न होते हैं ?**

.....

.....

.....

(h) **सातवें गुणस्थान में कितनी लेश्या पायी जाती हैं ? उनके नाम लिखिए।**

.....

.....

.....

(i) **चौस्पर्शी रूपी के 30 भेद लिखिए।**

.....

.....

.....

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार वाक्यों में लिखिए : - **8x4 = (32)**

(a) **ज्ञानावरणीय कर्म के बंध एवं उदय के प्रकारों का उल्लेख कीजिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(b) **असाता वेदनीय कर्म कितने प्रकार से बंधता हैं तथा कितने प्रकार से भोगा जाता हैं ?**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(c) **नाम कर्म की निम्न प्रकृतियों के नाम लिखिए।**

1. संघातन .....

2. संहनन .....

3. अंगोपाग .....

4. आनुपूर्वी .....

(d) **मोहनीय कर्म की 28 प्रकृतियों के नाम क्रम से लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(e) **मनुष्य गति के 303 भेदों को लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(f) **स्त्रीवेद, पुरुषवेद एवं नपुंसकवेद की आगति एवं गति लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(g) **चौदह गुणस्थानों में से एक से चार तक गुणस्थानों के बासठिया का प्रारूप लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(h) **अरूपी के 61 भेद लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....